मीडिया और हिंदी भाषा

सुनीता रा. हुन्नरगी

के.एल.ई. संस्था के जी. आय. बागेवाडी कला, विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय निपाणी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17264033

ABSTRACT:

मानव सभ्यता का चाहे कितना ही वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक विकास क्यों ना हो जाए, उत्तरोत्तर परिवर्तन और विकास के कारण नवोदित भावों, विचारों और संकल्पनाओं के संप्रेषण और विचार-विनिमय का माध्यम भाषा ही रहेगी। हर देश की पहचान वहां बोली जाने वाली भाषा से होती है। भारत में हिंदी भाषा का प्रयोग राजभाषा के साथ-साथ सर्वाधिक बोली जानेवाली और समझी जानेवाली भाषा के रूप में हिंदी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा भाव एवं विचारों की अभिव्यक्ति का साधन है। भाषा एक सशक्त माध्यम है जो सूचना एवं ज्ञान को जनों तक पहुंचाता है। भाषा को जनसंवाद के रूप में जोड़ने का काम आज आधुनिक युग में तीव्रता से हो रहा है। आज का युग इलेक्ट्रॉनिक है, इंटरनेट के माध्यम से तेजी से बढ़ रहा है। सोशल मीडिया-रेडियो, मोबाइल, फेसबुक, ट्विटर, ब्लॉग, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम, व्हाट्सएप, संगणक आदि। आधुनिक युग में भाषा के इस सामाजिक स्वरूप को और अधिक समृद्ध और व्यापक बनाने में आधुनिक विज्ञान और मीडिया का सर्वाधिक और उल्लेखनीय योगदान है। आज वे आपस में एक दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरा अपूर्ण और अपंग है।

KEYWORDS:

मीडिया, हिन्दी भाषा, फेसबुक और यूट्यूब.

प्रास्तावना:

जन सामान्य की भाषा को प्रस्तुत करने की मांग अधिकाधिक प्रखर और व्यापक होती जा रही है। आज ग्लोबल लैंग्वेज को पीछे छोड़ते हुए हिंदी भाषा ने अपने पंख पसार लिए हैं। आज सोशल मीडिया का हिंदी भाषा का संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज वर्तमान में सोशल मीडिया ने इतना धूम मचाया है कि साहित्यकार ही नहीं, बल्कि बाल, वृद्ध, युवा वर्ग भी अपनी बोली भाषा में अपने विषय को प्रस्तुत करने से परहेज नहीं करते। आज सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी भाषा का विकास हुआ है और यह समाज को जोड़ने का एक माध्यम बन चुकी है। हिंदी भाषा जनमानस की भाषा है, वह सोशल मीडिया के साथ अपनी मजबूत पकड़ को बनाए रखती है। कुछ समय के उपरांत हिंदी भाषा का वर्चस्व इतना बढ़ जाएगा कि लोग अपनी ईमेल आई डी भी हिंदी में बनाएंगे। आज सोशल मीडिया के सभी माध्यमों में हिंदी पढ़नेवालों और लिखने वालों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। आधुनिक युग सूचना एवं क्रांति का युग है। मीडिया का आधुनिक स्वरूप जिसमें सोशल मीडिया के विविध नए रूप शामिल हैं। आज मीडिया के माध्यम से दुनिया के विभिन्न देशों में संस्कृति के प्रतिमानों को आसानी से परस्पर ग्रहण किया जा रहा है। इस युग की क्रांति मीडिया से हो रही है। वर्तमान समाज मीडिया के नए स्वरूप 'न्यू मीडिया' का है। न्यू मीडिया से तात्पर्य है कि मीडिया जो कि पत्रकारिता का ही नया रूप है। आज इस तकनीकी युग में पत्रकारिता शब्द मीडिया और 'न्यू मीडिया' का रूप धारण कर चुका है। कल तक जिसे पत्रकारिता कहा जाता था, वह आज न्यू मीडिया के नाम से जाना जाता है। नए-नए आविष्कार इन आयामों को और नई दिशाओं को उद्घाटित कर रहे हैं। तार, मोबाइल, टेलीविजन, सिनेमा, रेडियो, ऑडियो-वीडियो, कंप्यूटर, एटीडी, इंटरनेट आदि संचार माध्यम हिंदी में विराट रूप धारण कर चुके हैं। मीडिया को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है: प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया।

प्रिंट मीडिया:

प्रिंट मीडिया छपे हुए रूप में होता है। जैसे: समाचार पत्र, पुस्तिकाएं, पत्रिकाएं, ब्रोशर, पोस्टर आदि। प्रिंट मीडिया की खासियत यह है कि इसे बार-बार पढ़ सकते हैं जिसके लिए साक्षरता की आवश्यकता

होती है। इसका रूप स्थाई होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रिंट मीडिया तेजी से बढ़ रही है। हिंदी की विकास यात्रा को देखकर हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि हिंदी भारत के विराट व्यक्तित्व का अनमोल स्वर है। इस देश की एकता सन्निहित है। जनवाणी हिंदी में भारत की स्वतंत्रता आंदोलन और उसके उत्कर्ष की गाथा है। हिंदी पत्रकारिता उसकी सशक्त संवाहिका बनी जिसमें समन्वय, समाहार और शांति के चिर स्पंदित भाव अनुस्यूत हैं। युगीन भाव बोध, लोक रुचि का परिष्कार एवं साहित्य संवर्धन में हिंदी पत्रकारिता का अविस्मरणीय योगदान है। हिंदी के विकास के लिए देश के प्रत्येक विभाग ने योगदान दिया है और दे रहा है। "आज आवश्यक है कि प्रत्येक भारतीय हिंदी संबंधी अपना दायित्व पूरा सक्रिय भूमिका निभाए। हिंदी के प्रति सम्मान भावना बढ़ाकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसका उपयोग करना आवश्यक है। हिंदी का आधिकारिक प्रयोग करने से वह सहज, सरल, और नित्य बनेगी।"[1] आज हिंदी पत्र-पत्रिकाओं का प्रसारण हिंदी भाषा क्षेत्र में ही नहीं, अपितु अन्य भाषा-भाषी राज्यों, जिलों व छोटे-छोटे कस्बों में भी स्थानीय समस्याओं को लेकर प्रकाशित हो रहे हैं। विदेशों में बसे हुए भारतीय प्रवासी भी हिंदी पत्र-पत्रिकाओं का संचालन कर रहे हैं। ठाकुर दत्त शर्मा आलोक के मतानुसार - "इस तरह की हिंदी पत्रकारिता का भविष्य उज्जवल जान पड़ता है। किंतु देखना यह है कि स्वातंत्र्योत्तर पत्रकारिता पाठकों के लिए उपयोगिता, प्रभावोत्पादकता, विश्वसनीयता, सम्मान, मानवाधिकार दिलाने, रोचकता और पठनीयता की दृष्टि से किस तरह वरदान सिद्ध हो सकता है, तथा सामाजिक प्रतिबद्धता में विवेक, क्षमता, समाज सेवा, त्याग, निष्पक्षता, राष्ट्रीयता, लक्ष्य पूर्णता, उत्तरदायित्व, आत्मबल और संरचनात्मकता के उदात्त मूल्यों को कैसे उजागर करती है।"[2]

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया:

आज के आधुनिक युग में सूचना और संचार के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। इसमें सबसे बड़ा योगदान इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया वह माध्यम है जिसके द्वारा जानकारी, समाचार, मनोरंजन और शिक्षा लोगों तक तेजी से पहुंचाई जाती है। जैसे: रेडियो, दूरदर्शन, सिनेमा, इंटरनेट, मोबाइल फोन, संगणक, तकनीकी क्षेत्र, सूचना प्रौद्योगिकी, फैक्स, इंटरनेट आदि।

संगणक:

विज्ञान ने मनुष्य को अनेक उपहार दिए हैं, जिनमें से संगणक सबसे महत्वपूर्ण है। शुद्धता, तीव्रता, व्यवहारिक सत्यता, विश्वसनीयता, सुंदरता का नाम ही संगणक या कंप्यूटर कहा जाता है। आज संगणक का उपयोग शिक्षा, व्यवसाय, चिकित्सा, बैंकिंग, अनुसंधान और मनोरंजन, साहित्यिक तथा भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के लिए हिंदी में कंप्यूटर औद्योगिकी का आज व्यापक पैमाने पर उपयोग किया जा रहा है।

रेडियो:

हिंदी भाषा के माध्यम से मीडिया ही लोगों को प्रत्येक क्षेत्र खेल, संगीत, व्यापार, शिक्षा, नाटक, खबर आदि की जानकारी प्रस्तुत कर रही है। जिससे लोगों को घर बैठे-बैठे हर क्षेत्र की जानकारी हासिल हो रही है। इस प्रकार मीडिया हिंदी के विकास में भारत की एक सशक्त माध्यम के रूप में उभर रहा है। रेडियो एक महत्वपूर्ण और पुराना इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम है, जो ध्वनि के माध्यम से जानकारी, समाचार, संगीत और मनोरंजन लोगों तक पहुंचाता है। यह तकनीक आज भी ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में समान रूप से लोकप्रिय है। रेडियो पर हिंदी में प्रसारित कार्यक्रमों ने लाखों-करोड़ों जनता को हिंदी सीखने को मजबूर कर दिया है। एफएम, विविध भारती, आकाशवाणी के अंतर्गत फिल्मी गाने, समाचार आदि प्रसारित कार्यक्रम हिंदी प्रेमियों को जोड़कर रखते हैं। विदेशों में 1908 में हिंदी की पढ़ाई जापान में शुरू की गई थी। जापान समेत अमेरिका के कई देशों में हिंदी फिल्मों के गीतों के द्वारा हिंदी शिक्षण कार्य किया गया और आज भी निरंतर जारी है। विदेश में हिंदी का परिचय और आकर्षण में फिल्मों और गीतों का बड़ा योगदान रहा है। आज जापान में 7 एफएम रेडियो खोले गए हैं, जो हिंदी गीतों को प्रसारित करते हैं। इसके साथ ही अमेरिका के विश्वविद्यालय में भी आज हिंदी पढ़ाई जाती है।

दूरदर्शन:

दूरदर्शन आज के युग की एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली खोज है। यह मनोरंजन, सूचना और शिक्षा का एक प्रमुख माध्यम बन चुका है। दूरदर्शन दृश्य-श्रव्य माध्यम में सबसे सशक्त माध्यम है। दूरदर्शन पर

प्रसारित होने वाले चित्रहार, रंगोली, छायागीत, खाना खजाना, कार्टून, गपशप आदि हिंदी कार्यक्रमों के द्वारा लोगों को हिंदी सीखने के लिए विवश कर दिया है।

मोबाइल:

वर्तमान युग मोबाइल युग कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। पहले मनुष्य को जीने के लिए रोटी, कपड़ा, मकान की आवश्यकता होती थी, परंतु अब मनुष्य के लिए मोबाइल ही उसके जीने का साधन बन गया है। आजकल वृद्ध भी मोबाइल में ही समय बिता रहे हैं, बच्चे आज मोबाइल के बिना खाना भी नहीं खा सकते। मोबाइल फोन आज हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। संचार के इस साधन ने पूरी दुनिया को हमारी मुट्ठी में ला दिया है, परंतु इसका बढ़ता हुआ प्रभाव चिंता का विषय भी बनता जा रहा है। मोबाइल फोन वरदान भी है पर उसका प्रयोग सीमित रूप से किया जाए। यह हमें अपनों से जोड़ने का काम करता है, जैसे शिक्षा, व्यापार, स्वास्थ्य सेवाओं जैसी कई सुविधाएं घर बैठकर उपलब्ध कराता है। ऑनलाइन क्लास, डिजिटल बैंकिंग, सोशल मीडिया, जीपीएस आदि सुविधाओं ने जीवन को सरल और तेज बना दिया है। मोबाइल फोन स्वयं में ना तो वरदान है और ना ही अभिशाप। यह उसके उपयोगकर्ता पर निर्भर है, कि वह उसका उपयोग कैसे करता है। यदि उसका उपयोग विवेकपूर्ण और सीमित रूप से किया जाए तो यह मानव जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी साधन है।

इंटरनेट:

अनादि काल से ही मनुष्य संचार के लिए नए-नए माध्यम खोजने का प्रयास कर रहा है। मनुष्य की इसी आवश्यकता का नाम इंटरनेट है। इंटरनेट के माध्यम से सोशल मीडिया सूचना क्रांति के नवीनतम साधन के रूप में विकसित हुई है। आज हिंदी भाषा में ई-मेल भेज सकते हैं। दूर विदेशों में बसे हुए आत्मीय लोगों से बातचीत कर सकते हैं। साहित्य विधा का ऑनलाइन अध्ययन कर सकते हैं। समाचार देख सकते हैं। अपने आलेख को मुखर तरीके से लिख सकते हैं तथा प्रकाशित भी कर सकते हैं। इंटरनेट के द्वारा हम अपनी किताबों को भी प्रकाशित कर सकते हैं। शिक्षा, चिकित्सा संबंधी जानकारी हासिल कर आज करोड़ों हिंदी प्रेमी इंटरनेट का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकते हैं। आज हिंदी भाषा का

मानव के साथ और इंटरनेट का रिश्ता मजबूत हो गया है। आज आधुनिक युग में शिक्षा संबंधी ऑनलाइन परीक्षा देना या फॉर्म भरने की सुविधा उपलब्ध की गई है। हिंदी भाषा के वृद्धि में एक नई दिशा मिली है।

फैक्स प्रणाली:

आज के आधुनिक जगत में इलेक्ट्रॉनिक फैक्स प्रणाली द्वारा कई सूचनाओं को लिखित रूप में किसी भी प्रांत में इस यंत्र द्वारा भेज सकते हैं। आज की डिजिटल युग में जहां ईमेल, स्कैनर और मैसेजिंग ऐप्स का बोलबाला है, वहीं फैक्स प्रणाली भी अभी तक कुछ क्षेत्रों में प्रासंगिक बनी हुई है। विशेष रूप से कानूनी, सरकारी और चिकित्सा क्षेत्रों में फैक्स का उपयोग दस्तावेजों को सुरक्षित और प्रामाणिक आदान-प्रदान के लिए किया जाता है।

व्हाट्सएप:

आज की डिजिटल युग में व्हाट्सएप एक ऐसा नाम बन चुका है जो लगभग हर स्मार्टफोन उपयोगकर्ता की जिंदगी का हिस्सा है। यह एक मोबाइल एप्लीकेशन है जिसकी मदद से लोग एक दूसरे से तुरंत संदेश, तस्वीर, वीडियो, दस्तावेज और आवाज संदेश भेज सकते हैं। व्हाट्सएप एक प्रभावशाली माध्यम है। इसके द्वारा लेखक तथा नए साहित्यकार लोग अपना समूह बनाकर अपनी रचना को प्रस्तुत करते हैं, दूसरों की कृतियों को पढ़ते हैं और प्रतिक्रिया भेजते हैं।

विज्ञापनों में हिंदी:

आज हिंदी विज्ञापन का क्षेत्र बहुत तेज गति से बढ़ रहा है। दुनिया में आज बाजारवाद का बोलबाला है। आज हर व्यक्ति को अपनी वस्तु बेचने की अंधाधुंध होड़ लगी हुई है। मनुष्य उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों ओर से कोशिश कर रहा है। व्यावसायिक कंपनियां उत्पादों का विज्ञापन हिंदी भाषा में कर रही हैं, क्योंकि भारत में अधिक संख्या हिंदी भाषी है। विज्ञापनों को देखकर हम वस्तु खरीदने के लिए मजबूर होते हैं। अगर अपनी वस्तु बेचनी है तो उन्हें हिंदी भाषा के साथ ही बाजार में उतरना पड़ेगा जिस हिंदी भाषा का प्रयोग मीडिया के विभिन्न माध्यमों द्वारा किया जा रहा है। हिंदी भाषा अपने आप में सर्वगुण संपन्न भाषा है। मीडिया ने हिंदी भाषा के

प्रयोग को अपने विकास का तथा हिंदी के प्रचार का सशक्त माध्यम बना लिया है। विज्ञापन को प्रभावित लोकप्रिय बनाने के लिए जैसे - "दूरदर्शन तथा फिल्म स्लाइड पर दिखाए जाने वाले ये विज्ञापन वस्तु का प्रदर्शन तथा वर्णन आकर्षक ढंग से करते हैं।"[3]

यूट्यूब:

आज के क्षेत्र में यूट्यूब एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा शिक्षा, खाना बनाना, साहित्य, नृत्य, संगीत, हास्य आदि किसी भी कार्यक्रम को हम अपलोड भी कर सकते हैं। लाइव दर्शकों को भी दिखा सकते हैं। अपना वीडियो अपलोड भी कर सकते हैं। हमारे देश में सोशल मीडिया का माध्यम रहा है। आज यूट्यूब द्वारा घर बैठे-बैठे शिक्षा से लेकर अनेक गतिविधियों को देख सकते हैं। मानव आज अपना ही यूट्यूब चैनल बनाकर पैसे कमाने में लग गया है। "सितंबर 2025 के अनुसार यूट्यूब यूजर्स दुनिया में 2.5 से 2.7 बिलियन के बीच अनुमानित हैं। वहीं भारत में इसके 491 मिलियन यूजर्स हैं जिसमें से अधिकांश वीडियो हिंदी भाषा में ही बनाए व देखे गए हैं। इसी तरह जून 2025 के अनुसार फेसबुक यूजर्स की संख्या 3.06 बिलियन उपयोगकर्ता है। दुनिया भर में 5.17 बिलियन सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं यानी वैश्विक जनसंख्या के 63.7% में से 52% यूट्यूब का उपयोग करते हैं।"[4] यूट्यूब पर वीडियो देख सकते हैं और वीडियो दूसरों के द्वारा लिंक साझा कर सकते हैं। यूट्यूब के द्वारा हम हिंदी भाषा के शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक क्षेत्र से संबंधित अनेक वीडियो किसी भी समय देख सकते हैं। हिंदी के विकास के लिए देश के प्रत्येक विभाग ने योगदान दिया है और दे रहा है। "आज आवश्यक है कि प्रत्येक भारतीय हिंदी संबंधी अपना दायित्व पूरा सक्रिय भूमिका निभाए। हिंदी के प्रति सम्मान भावना बढ़ाकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसका उपयोग करना आवश्यक है। हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने से वह सहज, सरल और नित्य बनेगी।"[5] हिंदी की सर्वाधिक प्रसारित होने वाली पत्रिका ई-पत्रिका है, जिसे लेखक विश्व की पहली यूनिकोडेड हिंदी भाषा में लिखता है। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के अंतर्गत बनाई गई 'हिंदी समय' (www.hindisamay) वेबसाइट पर करीब 1000 लेखकों को हम पढ़ते हैं। आज अखबार भी इंटरनेट पर आ चुके हैं, जिनमें दैनिक भास्कर, नवभारत टाइम्स, हिंदुस्तान, अमर उजाला, दैनिक

जागरण, जनसत्ता, देशबंधु आदि हैं। यूनिकोड मंगल जैसे यूनिवर्सल फॉन्ट में देवनागरी लिपि को कंप्यूटर पर, इंटरनेट पर हिंदी भाषा विकास के अनेक मार्ग खोल दिए हैं।

निष्कर्ष:

मीडिया एक अत्यंत गतिमान माध्यम है। यह दर्शकों को भी प्रगति प्रदान करता है। इसी कारण से हिंदी की जरूरत निरंतर बढ़ती जा रही है। पिछले कुछ सालों से सोशल मीडिया भारतीय युवकों के बीच ही नहीं बल्कि पुरानी पीढ़ी में काफी बदलाव हुआ है। सोशल मीडिया की मांग आधुनिक युग में लगातार बढ़ रही है। कुछ दशक पहले मीडिया के सिर्फ प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक दो ही प्रकार थे, परंतु धीरे-धीरे सोशल मीडिया ने अपना सिक्का जमाया है। रेडियो ने हिंदी भाषा से परिचित कराई, तो सिनेमा ने जनमानस को इतना आकर्षित किया कि हिंदी भाषा प्रेमियों की संख्या तो बढ़ गई और चार चांद लगाए। दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम से अहिंदी भाषा क्षेत्र के लोगों को हिंदी सीखने को मिल गई। उभरते हुए नए लेखकों के लिए सोशल मीडिया एक अच्छा प्लेटफार्म सिद्ध हो चुका है। लेखक अपनी मौलिक रचनाओं को फेसबुक, व्हाट्सएप के द्वारा हर क्षेत्र में पहुंचा सकते हैं तथा लोगों की प्रतिक्रिया भी जान सकते हैं। पूरे देश में ही नहीं पूरे विश्व में मीडिया और सोशल मीडिया का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है। हिंदी के प्रचार-प्रसार कार्य में सोशल मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मीडिया के कारण आज मनुष्य अपडेट है और कभी भी किसी भी समय अपना मनचाहा वार्ता, खबर, समाचार पत्र, पत्रिका, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर इंटरनेट के माध्यम से देख सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ:

1. हंस- अगस्त- 2001, पृ. सं- 34
2. ठाकुर दत्त शर्मा आलोक, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार
3. व्यवहारिक पत्र लेखन, डॉ. के.पी. शाह मेहता पब्लिशिंग हाउस, सदाशिव पेठ पुणे, पृ.सं- 191
4. हंस- अगस्त -2001, पृ. सं-34

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.